23/01/2020

Page-1

* विद्यालय में लिंग के निर्माण में पाठ्यपुस्तक की विवेचना करें।

Ans. पाठ्यपुस्तकों का वर्तमान शिक्षा में महत्वपूर्ण स्थान है प्राचीन कालों में जब पुस्तकों का अविष्कार नहीं हुआ था तब भी लिखित सामग्री का प्रयोग था और उस कार्य के लिए भोजपत्र का प्रयोग किया जाता था आज Digital होती दुनियाँ में शिक्षा के क्षेत्र में पुस्तकें भी Digital होती जा रही है परन्तु उनका महत्व कम नहीं हुआ है पाठ्यपुस्तकों को वर्तमान शिक्षा में शिक्षण के साथ मुख्य सामग्री के रूप में प्रयोग किया जा रहा है, शिक्षण ही नहीं अन्य क्षेत्रों में भी पुस्तकों का अपना विशिष्ट महत्व है पाठ्यपुस्तक के अर्थ का स्पष्टीकरण शिक्षा शब्द कोष में इस प्रकार किया गया है —

परिभाषा " पाठ्यपुस्तक अध्ययन की निश्चित विषय वस्तु से सम्बंधित पुस्तक है जो क्रमबद्ध ढंग से व्यवस्थित, शिक्षण के विशिष्ट स्तर पर उपयोग के लिए अभिप्रेत एवं प्रदत्त design पाठ्यक्रम के लिए अध्ययन की सामग्री के प्रमुख रूप में प्रयोग की जाती है"

इस प्रकार

Page 2

पाठ्यपुस्तकों के द्वारा शिक्षण हेतु सामग्री प्रदान की जाती है जिसमें विषय सूची की सामग्री, प्रश्न, समस्याएं एवं अभ्यास क्रियाएं सम्मिलित होती हैं तथा उनके समाधान हेतु निर्देश भी दिये होते हैं. पाठ्यपुस्तकें चुनौतीपूर्ण लिंग की असमानता की समाप्ति और उनकी प्रभावी भूमिका के प्रस्तुतीकरण में सहायक हैं और भूमिका निम्नलिखित है—

(i) पाठ्यपुस्तकें गंभीर चिंतन और विद्वानों के प्रयासों के परिणामस्वरूप तैयार किया जाती है अतः इसमें भेद-भाव को बढ़ावा देने वाली सामग्री नहीं होती है।

(ii) इसमें चुनौतीपूर्ण लिंग की समानता और सशक्त भूमिका के प्रस्तुतीकरण के लिए विभिन्न क्षेत्रों में उनके योगदान का वर्णन किया गया है।

(iii) चुनौतीपूर्ण लिंग के विषय में जो अंधविश्वास और गलत धारणाएं व्याप्त हैं उन्हें समाप्त करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

(iv) चुनौतीपूर्ण लिंग की समानता और भूमिका के प्रस्तुतीकरण में पाठ्यपुस्तक इस दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इनके द्वारा ही विषयपूर्ण ज्ञान और वास्तविकता प्राप्त होती है।

(v) इनमें जो सामग्री होती है वह अत्यधिक सावधानी के साथ निर्मित की जाती है, जिनसे शिक्षक

को चुनौतीपूर्ण लिंग की समानता और सशक्त भूमिका के सशक्तीकरण में सहायता प्राप्त करनी होती है।

(VI) इसके द्वारा शिक्षक शिक्षण या तो मानता है या की आवश्यकता आती है जिसके कारण चुनौतीपूर्ण लिंग की समानता और सशक्तीकरण का मार्ग प्रशस्त होती है।

(VII) चुनौतीपूर्ण लिंग की समानता और सशक्त भूमिका के सशक्तीकरण में पाठ्यपुस्तक इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि पाठ्यपुस्तक छात्रों के रुचियों, आवश्यकताओं तथा मनोविकास का ध्यान रखता जाता है।

(VIII) पाठ्यपुस्तक शिक्षण ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विद्यालयी वातावरण और क्रियाकलापों को मार्ग निर्देशित करते हैं इस प्रकार चुनौतीपूर्ण लिंग के प्रति समुचित दृष्टिकोण विकसित होता है।

(ix) इसके द्वारा नवीन ज्ञान और सूचनाओं से अवगत कराया जाता है, जिससे चुनौतीपूर्ण लिंग की असमानता के कारण आदि चुनौतियों से भी अवगत कराया जाता है अतः इनकी समानता हेतु जागरूकता लाने का कार्य पाठ्यपुस्तक करता है।

(x) पाठ्यपुस्तकों में स्त्रियों का अधिकार और कानून व्यवस्था इत्यादि के विषय में प्रदान की जाने वाली जानकारी, इनकी समानता और सार्थक भूमिका के प्रस्तुतीकरण में योगदान देती है।

Page. 4

अतः समूह की भावना के द्वारा चुनौतीपूर्ण लिंग के प्रति अन्य लिंग संवेदनशील होंगे। अगर शिक्षक व्यापक दृष्टिकोण वाला होगा, तब पाठ्यक्रम में सभी बालक और बालिकाओं के लिए अंतः-क्रिया और अन्य क्रियाओं का समान अवसर ~~मिले~~ ~~सभी~~ मिले और अंतः हमारी पाठ्यपुस्तक चुनौतीपूर्ण लिंग की समानता और प्रभावी भूमिका को दृष्टिगत रखते हुए सभी रची जाए तो आने वाले समय में आधी आबादी की ~~बौद्धिक~~ और शारीरिक और बौद्धिक शक्तियों का समुचित प्रयोग करके हम अपने मानवीय व्यवहारों में परिवर्तन ला सकेंगे।